3

परमेश्वर के पुत्र के द्वारा उद्धार

यीशु मसीह बाइबल की कहानी के केन्द्र में खड़ा है। पुराना नियम उसके आने की तैयारी करता है। सुसमाचार उसके आने के बारे में बताता है। फिर नये नियम की शेष पुस्तकें उसके आने के महत्व को समझाती और घोषणा करती हैं कि वह फिर आ रहा है।

इसलिए हमारे लिए कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि जब प्रेरित यूहन्ना ने अपनी पहली पत्री में अपने पाठकों को अपने विश्वास पर यकीन करने के लिए कहा, तो उसने ज़ोर दिया कि उनका ''उद्धार पुत्र के द्वारा'' हुआ था। पत्र के अध्याय 2 का आरम्भ उसने इन शब्दों से किया:

> [1]हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूं, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह। [2]और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है: और केवल हमारे ही नहीं, बरन सारे जगत के पापों का भी।

''धर्मी यीशु मसीह'' हमारे उद्धार की आशा है!

इस पाठ में हम इस बात पर ध्यान दें कि यूहन्ना ने यीशु के बारे में क्या कहा कि वह कौन है। फिर हम पूछेंगे कि उसने क्या किया है। अन्त में हम विचार करेंगे कि वह हमसे क्या अपेक्षा करता है।

यह यीशु कौन है?

यीशु के बारे में सच्चाई:

1 यूहन्ना में यीशु के विवरण

यूहन्ना के अनुसार यीशु है ...

1. *''जो आदि से था''* (1 यूहन्ना 1:1-3)।[1]
2. *''जीवन का वचन''* (1 यूहन्ना 1:1; देखें यूहन्ना 1:1, 14)।
3. *''अनन्त जीवन''* (1 यूहन्ना 1:2; देखें यूहन्ना 1:4; 14:6)।
4. *''यीशु''-अर्थ''* *उद्धार''* (1 यूहन्ना 1:3, 7; देखें मत्ती 1:21, 25)।
5. *''मसीह''-का अर्थ''* *अभिषिक्त''* (1 यूहन्ना 1:3; 2:22; 5:1)। 1 यूहन्ना में नाम ''मसीह'' में यह विचार शामिल है कि यीशु ईश्वरीय है।
6. *परमेश्वर का पुत्र, पिता का पुत्र* (1 यूहन्ना 1:3, 7; 2:22, 23; 4:9, 14, 15; 5:9)। परमेश्वर का पुत्र होने का अर्थ परमेश्वर के स्वभाव वाला होना है (देखें यूहन्ना 10:32-38 और 2 यूहन्ना 3, 4, 9)।
7. *''धर्मी''* (1 यूहन्ना 2:1; 3:7; इब्रानियों 4:15 से तुलना करें)।
8. *सहायक* (1 यूहन्ना 2:1)।

9. *हमारे पापों का प्रायश्चित* (1 यूहन्ना 2:2; 4:10)।[2]
10. *उद्धारकर्त्ता* (1 यूहन्ना 4:14)।[3]

यीशु के बारे में झूठी शिक्षा

यीशु का विवरण इन सब तरह से करने के अलावा यूहन्ना ने अपने पाठकों से यीशु के स्वभाव के बारे में झूठी शिक्षा से चौकस रहने के लिए कहा। झूठी शिक्षा देने वालों के बारे में उसकी चैतावनियां एक ताल अर्थात ऐसे विषय बन जाती हैं जो पूरी पत्री में मिले हैं। अध्याय 2 के दूसरे भाग में उसने लिखा,

> [18]हे लड़को, यह अन्तिम समय है, और तुमने सुना है, कि मसीह का विरोधी आने वाला है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीह के विरोधी उठे हैं; इससे हम जानते हैं, कि यह अन्तिम समय है। [19]वे निकले तो हम ही में से, पर हम में से थे नहीं; क्योंकि यदि हम में के होते, तो हमारे साथ रहते, पर निकल इसलिए गए कि यह प्रगट हो कि वे सब हम में से नहीं हैं। [20]और तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है, और तुम सब कुछ जानते हो। [21]मैं ने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा, कि तुम सत्य को नहीं जानते, पर इसलिए, कि उसे जानते हो, और इसलिए कि कोई झूठ, सत्य की ओर से नहीं। [22]झूठा कौन है ? केवल वह, जो यीशु के मसीह होने से इन्कार करता है; और मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का और पुत्र का इन्कार करता है। [23]जो कोई पुत्र का इन्कार करता है उसके पास पिता भी नहीं: जो पुत्र को मान लेता है, उसके पास पिता भी है। [24]जो कुछ तुमने आरम्भ से सुना है वही तुम में बना रहे: जो तुम ने आरम्भ में सुना है, यदि वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में, और पिता में बने रहोगे। [25]और जिसकी उसने हमसे प्रतिज्ञा की वह अनन्त जीवन है।
>
> [26]मैंने ये बातें तुम्हें उन के विषय में लिखी हैं, जो तुम्हें भरमाते हैं। [27]और तुम्हारा यह अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया, तुममें बना रहता है; और तुम्हें सिखाए, बरन जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हजें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नहीं: और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो।
>
> [28]निदान, हे बालको, उसमें बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके साम्हने लज्जित न हों। [29]यदि तुम जानते हो, कि वह धार्मिक है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धर्म का काम करता है, वह उससे जन्मा है।

1 यूहन्ना 4:1-3 में यूहन्ना ने इन्हीं झूठे शिक्षकों की बात की:

> [1]हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: बरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं। [2]परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो, कि जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है। [3]और जो कोई आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह

> के विरोधी की आत्मा है; जिसकी चर्चा तुम सुन चुके हो, कि वह आनेवाला है: और अब भी जगत में है।

ये झूठे शिक्षक कौन थे और ये क्या सिखाते थे? यूहन्ना ने उन्हें ''झूठे'' और ''मसीह के विरोधी'' कहा यानी जो मसीह के विरोध में हैं। उसने कहा कि वे ''निकले तो हम ही में से'' थे (1 यूहन्ना 2:18, 19; यूहन्ना 1:7)। यानी वे विश्वास से फिर जाने वाले मसीही थे।[4] इसके अलावा जो कुछ वे सोचते थे उससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि उन्होंने दूसरी शताब्दी के एक विधर्म, gnosticism के एक आरम्भिक रूप को अपना लिया है।

''Gnosticism'' वह शब्द है जो ''ज्ञान'' के लिए यूनानी शब्द ''knowledge'' (*gnosis*) से लिया गया है। नॉस्टिक लोग उस विशेष ज्ञान के होने का दावा करते थे, जो दूसरे के पास नहीं था। नॉस्टिकवाद के कई विभिन्न रूप थे, किन्तु सभी नास्टिकों का एक विश्वास साझा था कि वे यह मानते थे कि आत्मा अच्छी है परन्तु कुछ भी जो भौतिक है, जिसमें शरीर भी है बुरा है। जिसके परिणामस्वरूप उनका मानना था कि परमेश्वर, जो आत्मा है और कुल मिलाकर अच्छा है, वास्तव में मानवीय देह में आकर नहीं रह सकता था। उनके अनुसार परमेश्वर देह नहीं बन सकता!

तो फिर यीशु कौन था? जो नॉस्टिक था उसके लिए दो सम्भावनाएं थीं। (1) यीशु वास्तविक देह नहीं था यानी वह देह लगता था या देह होने के लिए प्रकट हुआ। इस विचार को मानने वाला व्यक्ति यह विश्वास कर सकता था कि पृथ्वी पर रहते समय यीशु तीन आयामों वाली तस्वीर की तरह एक स्वलेख था। वह यह अपेक्षा कर सकता था कि यदि वह यीशु को स्पर्श कर सके, तो उसका हाथ उस में से निकल जाएगा। (2) दूसरी सम्भावना यह थी कि यीशु केवल मनुष्य था, परन्तु बीच में कहीं, शायद जब उसका बपतिस्मा हुआ था, तो मसीह उस में रहने के लिए आ गया। इसलिए अपनी सेवकाई के दौरान, यीशु एक मनुष्य था जिसमें मसीह वास करता था।[5] परन्तु उसकी मृत्यु से पहले, मसीह ने उसे छोड़ दिया, जिस कारण क्रूस पर मरने वाला यीशु मनुष्य ही था। इस सोच के अनुसार यीशु और मसीह में एक स्पष्ट अन्तर किया जाना आवश्यक है, जिसमें यीशु केवल एक मनुष्य है और मसीह ईश्वरीय है न कि सचमुच में मनुष्य।

यूहन्ना द्वारा इन दोनों ही विचारों का खण्डन किया गया। यूहन्ना ने इस बात पर ज़ोर दिया कि यीशु मसीह पृथ्वी पर केवल एक ही व्यक्ति था, अर्थात वह परमेश्वर का पुत्र देह में आया और था! इसके अलावा उसने ज़ोर दिया कि जब तक हम यह नहीं मानते कि यीशु ही मसीह है यानी वह परमेश्वर है, अर्थात वह शरीर में परमेश्वर आया, तब तक हमारा उद्धार नहीं हो सकता!

यीशु के वास्तविक स्वभाव की गवाहियां

हमें यीशु में विश्वास क्यों करना चाहिए? 1 यूहन्ना में कहीं और हमें पता चलता है कि हम उसकी ईश्वरीयता की गवाहियों के कारण जान सकते हैं कि यीशु मसीह सचमुच में वही था जो उसने कहा कि वह है।[6] वे गवाह कौन थे?

(1) *प्रेरित।* यूहन्ना ने लिखा कि प्रेरितों ने जो सुना, देखा और छुआ। उन्हें मालूम था कि यीशु सचमुच मनुष्य था। यूहन्ना ने कहा, ''यह जीवन प्रगट हुआ, और हमने उसे देखा, और उसकी गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं, जो पिता के साथ था,

और हम पर प्रगट हुआ'' (1 यूहन्ना 1:2)।

(2) *आत्मा, पानी और लहू।* 1 यूहन्ना 5:6-8 में हम पढ़ते हैं:[7]

> [6]यही है वह, जो पानी और लोहू के द्वारा आया था; अर्थात यीशु मसीह वह न केवल पानी के द्वारा, बरन पानी और लोहू दोनों के द्वारा आया था। [7]और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है। [8]और गवाही देने वाले तीन हैं; आत्मा, और पानी, और लोहू; और तीनों एक ही बात पर सहमत हैं।

इन तीनों गवाहों को एक-दूसरे से सहमत बताया गया है। ''पानी'' सम्भवतया यीशु के बपतिस्मे की बात है। ''लहू'' यीशु की मृत्यु की ओर संकेत है और इसमें उसके जी उठने का संकेत हो सकता है। ''आत्मा'' पवित्र आत्मा है और उसका वर्णन ''सत्य'' के रूप में किया गया है। वह झूठ नहीं बोल सकता। यीशु के बपतिस्मे के समय, परमेश्वर ने गवाही दी कि यीशु उसका पुत्र है।[8] यीशु की मृत्यु के समय आश्चर्यजनक बातें हुईं, जैसे सूरज अंधेरा हो गया, भूकंप आया और मन्दिर का पर्दा दो फाड़ हो गया। फिर जी उठना हुआ। बाद में पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को सुसमाचार सुनाने के लिए प्रेरणा दी और उन्होंने प्रचार किया कि यीशु ही मसीह है। इसके अलावा बपतिस्मा लेने वाले हर व्यक्ति को पवित्र आत्मा दिया गया था (प्रेरितों 2:38; 5:32)। नये मसीही में उसकी उपस्थिति यह प्रमाण थी कि उस व्यक्ति का उद्धार हो गया है और इस कारण वह यह प्रमाण था कि यीशु वही है जो उसने कहा था कि वह है। इसलिए ये तीनों गवाह एकमत हैं कि यीशु परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र है।

(3) *परमेश्वर।* यीशु की ईश्वरीयता का गवाह स्वयं परमेश्वर है। यूहन्ना ने कहा:

> जब हम मनुष्यों की गवाही मान लेते हैं, तो परमेश्वर की गवाही तो उससे बढ़कर है; और परमेश्वर की गवाही यह है, कि उसने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है। जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह अपने ही में गवाही रखता है; जिसने परमेश्वर की प्रतीति नहीं की, उसने उसे झूठा ठहराया; क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। और यह गवाही है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है (1 यूहन्ना 5:9-12)।

परमेश्वर ने कई प्रकार से गवाही दी कि यीशु उसका पुत्र है। कम से कम दो अवसरों पर उसने स्वर्ग से बात की (मत्ती 3:17; 17:5) और उसके अपना पुत्र होने का दावा किया। परमेश्वर ने यीशु को आश्चर्यकर्म करने के योग्य बनाया, जिससे उसके परमेश्वर का पुत्र होने की बात साबित हुई (इब्रानियों 2:4; यूहन्ना 20:30, 31)। मसीह और उसके प्रेरितों के द्वारा उसने प्रकट किया कि यीशु ही अनन्त जीवन पाने का मार्ग है। ऊपर दी गई आयत में यूहन्ना ने ज़ोर दिया कि विश्वासी के पास ''अपने आप में'' परमेश्वर की गवाही है यानी यीशु अर्थात परमेश्वर के पुत्र के द्वारा उसका उद्धार, यीशु की ईश्वरीयता का प्रमाण है।

इस तथ्य के परिणाम कि यीशु ईश्वरीय था

यीशु मसीह ईश्वरीय है, परन्तु इसका हमारे लिए क्या अर्थ है ? हमारे लिए इसका अर्थ वही है जो पहली सदी के लोगों के लिए था। यानी यह कि हम उद्धार पाने के लिए यीशु को मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र होना स्वीकार करें !

कलीसिया में जाने वालों के लिए यह बात हो सकता है कि क्रांतिकारी न लगे। परन्तु पहली सदी में यह क्रांतिकारी थी। यीशु के अलावा कभी किसी ने वे दावे नहीं किए जो उसने किए। किसी के चेले ने वह दावे नहीं किए जो यीशु के चेलों ने किए। उन्होंने कहा कि जब तक यीशु में विश्वास करके सुसमाचार की बात नहीं मानी जाती तब तक संसार का हर व्यक्ति खोया हुआ है।

यदि यह गवाह बिल्कुल सही थे, और यदि यीशु देह में परमेश्वर था, तो वही बात आज सच है ! आज संसार के लोगों में से लगभग 70 प्रतिशत लोग वचन के किसी भी अर्थ में मसीही नहीं हैं। आज के संसार की जनसंख्या यदि छह अरब है और यदि उनमें से पांच अरब जिम्मेदार वयस्क हैं तो इसका अर्थ यह है कि उनमें से 3.5 अरब लोग खोए हुए हैं, क्योंकि वे नहीं मानते कि यीशु ही मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र है और उन्होंने सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानी है !

हमें भी जो मसीही होने का दावा करते हैं कुछ अर्थ में सोचना आवश्यक है। उनमें से अधिकतर लोग सोचते हैं कि यीशु एक ''भला'' मनुष्य या बहुत अच्छा गुरु था। वे किसी दूसरे के पीछे चलने के बजाय उसके पीछे चलने को प्राथमिकता देते हैं, परन्तु वे इस विचार को नकारते हैं कि दूसरे लोग यदि यीशु में विश्वास न करें तो सदा के लिए खो जाएंगे। यदि मसीहियत में कलीसियाओं में इसके व्यापक अर्थ में सोचा जाए तो बहुत से लोग यह शिक्षा बता रहे हैं कि मसीही होना अच्छी बात है परन्तु किसी अन्य धार्मिक विश्वास के सदस्य होना या नास्तिक होना भी गलत नहीं है जब तक कोई व्यक्ति अच्छा है और उसका जीवन उस विश्वास के अनुसार है जिसे वह मानता है !

मसीह में विश्वास करना कई विकल्पों में से एक नहीं है। यदि व्यक्ति उद्धार पाना चाहता है, तो परमेश्वर की ओर से उपलब्ध केवल एक ही विकल्प यीशु मसीह है। जिस प्रकार से इस पृथ्वी पर सूर्य के बिना जीवन असम्भव होगा वैसे ही बिना पुत्र के परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन असम्भव है !

यीशु ने क्या किया है ?

दूसरा प्रश्न जो पूछा जाना चाहिए वह यह है कि ''यीशु ने हमारे लिए और मनुष्यजाति के लिए क्या किया है ?'' वास्तव में हमें दो प्रश्न पूछने चाहिए कि ''यीशु ने क्या किया ?'' और ''वह क्या कर रहा है ?''

यीशु ने जो किया

1 यूहन्ना में कम से कम छह बार हमें बताया गया है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार का उद्धारकर्त्ता होने के लिए भेजा या यीशु आया। उदाहरण के लिए 1 यूहन्ना 2:2 में हम पढ़ते हैं कि वह ''हमारे पापों का प्रायश्चित है, केवल हमारे ही नहीं वरन सारे जगत के पापों का भी।''[9] 1 यूहन्ना 3:16 पुस्तक की ऐसी अन्य बातों का प्रतिनिधि है: ''हमने प्रेम इसी से जाना, कि उसने

हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए।''[10] अन्य वचनों में हम सीखते हैं कि ''वह इसलिए प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए'' (1 यूहन्ना 3:5), कि वह ''इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे'' (1 यूहन्ना 3:8), कि ''परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं'' (1 यूहन्ना 4:9), और यह कि परमेश्वर ने ''पुत्र को जगत का उद्धारकर्त्ता करके भेजा है'' (1 यूहन्ना 4:14)।

यीशु जो करता है

यीशु द्वारा दिए गए लाभ केवल अतीत में ही नहीं अर्थात क्रूस पर उसके आकर मरने में ही नहीं है कि हमारा उद्धार हो सके। वे वर्तमान में भी हैं। यीशु आज अपने चेलों के लिए कुछ कर रहा है! क्या?

(1) *उसका लहू हमें शुद्ध कर रहा है।* मसीही लोगों को यह आश्वासन मिला है कि ''यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी [लगातार] ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से [लगातार] सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू [लगातार] हमें सब पापों से शुद्ध करता है'' (1 यूहन्ना 1:7)।[11] मसीह की मृत्यु हमारे पापों के प्रायश्चित का काम करती है, न केवल हमारे मसीही बनने पर बल्कि मसीही होने के रूप में हमारे पाप करने पर भी। जिसके परिणाम में हमारे पाप शुद्ध किए जाते और क्षमा किए जाते हैं।

(2) *वह हमारे सहायक के रूप में काम कर रहा है,*[12] यानी वह पिता के साथ हमारा मध्यस्थ है। यूहन्ना ने लिखा, ''हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूं, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह'' (1 यूहन्ना 2:1)। यह तो ऐसा है जैसे न्याय के स्वर्गीय अदालत में हम पर मुकदमा चल रहा हो जिसमें यीशु हमारी ओर से हमारे पक्ष में खड़ा होकर पिता के सामने बोल रहा है। वह कुछ इस प्रकार कह रहा हो सकता है, ''पिता, मैं जानता हूं कि इस भाई [या बहन] ने पाप किया, परन्तु मैं यह भी जानता हूं कि मनुष्य होने के कारण पाप से बचे रहना कितना कठिन है। वह अपने पाप के लिए शर्मिंदा है। कृपया इसे क्षमा कर दें। मैंने इसके पाप का दण्ड चुकाने के लिए अपने आपको पेश कर दिया।'' जब यीशु हमारा वकील है, तो हम पक्का जान सकते हैं कि हम मुकद्दमा जीत लेंगे और हमें क्षमा मिल जाएगी।

(3) *वह अनन्त जीवन का हमारा आश्वासन है।* यूहन्ना ने लिखा, ''परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: और यह जीवन उसके पुत्र में है'' (1 यूहन्ना 5:11)। यूहन्ना की शब्दावली में यीशु अनन्त जीवन है। जब हम उससे जुड़ जाते हैं तो हमें भी वही जीवन मिलता है। अब हमारे पास वह इस अर्थ में है कि हम मसीह के जीवन में सहभागी हैं; अनन्त जीवन जीवन की वह विशेषता है जिसे वही लोग जानते हैं, जो मसीही हैं। परन्तु जो अनुभव आज हम करते हैं वह केवल उसका पूर्व स्वाद है जो हमें सदा के लिए मिलेगा। एक दिन अनन्त जीवन की *खूबी* वह *मात्रा* बन जाएगी जो माप से बाहर, असीमित, समयहीन जीवन अर्थात अनन्तकाल तक रहने वाली है। मसीह के साथ एक होना अब हमें आश्वस्त करता है कि हम सदा तक उसके साथ एक होंगे।

हम यह कहकर अपने उद्धार को देख सकते हैं कि हमारा उद्धार तब हुआ *था* जब हम

मसीही बने थे; मसीही के रूप में पाप करने पर क्षमा किए जाने से हमारा उद्धार *हो रहा* है; और न्याय के दिन अनन्त प्रतिफल में प्रवेश करने पर न्याय के दिन के बाद हमें उद्धार मिलेगा। हर हाल में उद्धार पुत्र अर्थात यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र के द्वारा ही होता है। आरम्भ में वह हमें बचाने के लिए मरा, उसका लहू निरन्तर हमें शुद्ध करता रहता है और अनन्तकाल तक रहना भी उसी के के द्वारा होगा।

यीशु क्या मांग करता है?

एक तीसरे प्रश्न का उत्तर दिया जाना आवश्यक है कि ''यीशु हम से अर्थात उन लोगों से क्या मांग करता है जिनके लिए उसने इतना कुछ किया?'' अध्याय 2 का अधिकतर भाग इसी प्रश्न कार उत्तर देने के लिए लिखा गया था। आइए 1 यूहन्ना 2:3–17 पर विचार करते हैं।

> [3]यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो इससे हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं। [4]जो कोई यह कहता है, कि मैं उसे जान गया हूं, और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उसमें सत्य नहीं। [5]पर जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है: हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उसमें हैं। [6]जो कोई यह कहता है, कि मैं उसमें बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था।
>
> [7]हे प्रिय, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिखता, पर वही पुरानी आज्ञा जो आरम्भ से तुम्हें मिली है; यह पुरानी आज्ञा वह वचन है, जिसे तुमने सुना है। [8]फिर मैं तुम्हें नई आज्ञा लिखता हूं; और यह तो उस में और तुम में सच्ची ठहरती है; क्योंकि अन्धकार मिटता जाता है और सत्य की ज्योति अभी चमकने लगी है। [9]जो कोई यह कहता है, कि मैं ज्योति में हूं; और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अन्धकार ही में है। [10]जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति में रहता है, और ठोकर नहीं खा सकता। [11]पर जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह अन्धकार में है, और अन्धकार में चलता है; और अन्धकार ने उसकी आंखें अन्धी कर दी हैं।
>
> [12]हे बालको, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूं, कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए। [13]हे पितरो, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूं, कि जो आदि से है, तुम उसे जानते हो: हे जवानो, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूं, कि तुमने उस दुष्ट पर जय पाई है: हे लड़को, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, कि तुम पिता को जान गए हो। [14]हे पितरो, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए हो: हे जवानो, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, कि तुम बलवन्त हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, और तुमने उस दुष्ट पर जय पाई है।
>
> [15]तुमने न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखा: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। [16]क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। [17]और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।

इन आयतों के आधार पर हम क्या कह सकते हैं कि परमेश्वर उन लोगों से जिनका उद्धार उसने उसके लहू से किया है ञया मांग करता है? चार बातें स्पष्ट हैं या उनका संकेत मिलता है।

(1) *यूहन्ना ने संकेत दिया कि हमें उन सच्चाइयों को पकड़े रखने की आवश्यकता है जिन्हें हम ने मसीही बनने के समय माना था* (2:12-14)। तीन तरह के मसीही लोगों अर्थात ''बालकों,'' ''पिताओं,'' और ''जवानों'' को 2:12-14 में सम्बोधित किया गया है। यह वचन लगभग कोष्ठक जैसा लगता है जिसमें लगता है कि यह अपने से पहले और बाद में आने वाले से कोई सम्बन्ध नहीं रखता। इसे समझने का एक ढंग यूहन्ना को सूची में सब मसीही लोगों को सम्बोधित करने के रूप में देखता है। वह उन्हें याद दिलाना चाहता था कि यीशु कौन है और उसने उनके लिए क्या किया था। उसने लिखा, ''तुम्हारे पाप क्षमा हुए हैं''; ''जो आदि से है तुम उसे जानते हो''; ''तुमने उस दुष्ट पर जय पाई हो''; ''तुम पिता को जान गए हो''; ''तुम बलवंत हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है।'' झूठी शिक्षा देने वालों ने दावा किया था कि उद्धार के लिए आवश्यक विशेष सच्चाई केवल उन्हें ही मालूम थी और इन विश्वासियों को यह यकीन दिलाने की कोशिश की थी कि उनके अपने मसीही विश्वास में किसी न किसी तरह कमी थी। यूहन्ना उन्हें बताना चाहता था कि उनके विश्वास में कोई खोट नहीं थी! उन्हें केवल वही विश्वास करने और सिखाने की आवश्यकता थी जो उन्हें पहले से पता था।

(2) *यूहन्ना ने कहा कि हमें आज्ञाओं को मानना आवश्यक है* (2:3-6)। वास्तव में उसने कहा कि ''जो कोई यह कहता है, कि मैं उसे जान गया हूं, और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उसमें सत्य नहीं'' (1 यूहन्ना 2:4)। इसके विपरीत, ''जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है: हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उसमें हैं'' (1 यूहन्ना 2:5; देखें आयत 6)। कौन सी आज्ञाएं माननी आवश्यकता हैं? सभी आज्ञाएं! हम अपनी मर्जी से कुछ आज्ञाओं को मानना चुनकर सचमुच में यीशु मसीह के पीछे चलने वाला होने का दावा कैसे कर सकते हैं? उदाहरण के लिए क्या एक मसीही व्यक्ति के लिए यह कहना सही होगा कि ''मैं अपने पड़ोसी का भला करूंगा क्योंकि मसीह चाहता है मैं करूं, परन्तु मैं कलीसिया की सेवाओं में भाग नहीं लूंगा या कलीसिया को दान नहीं दूंगा, चाहे प्रभु ने इसकी आज्ञाएं दी हैं?'' निश्चय ही नहीं!

(3) *यूहन्ना ने कहा कि हमें भाइयों से प्रेम करना आवश्यक है* (1 यूहन्ना 2:7-11)। उन सभी आज्ञाओं में से जो परमेश्वर ने हमें दी हैं, यूहन्ना निश्चित रूप से ''एक दूसरे से प्रेम'' करने की आज्ञा के प्रति सबसे पक्षपाती था। उसने ध्यान दिलाया कि यह आज्ञा कोई नई आज्ञा नहीं है। प्रेम करने की आज्ञा सब आज्ञाओं का सार है और इन मसीही लोगों को ''आरम्भ से'' प्रेम करना सिखाया गया था। परन्तु जब मसीही ने अपने चेलों को यह आज्ञा दी तो उसने इसे ''नई'' कहा (यूहन्ना 13:34, 35)।[13] उसने जोड़ा कि यदि हम ज्योति में चलने का दावा तो करें, परन्तु अपने भाई से घृणा करें तो हम पाप कर रहे हैं या हम अंधकार में चल रहे हैं। इसलिए जो कुछ मसीह ने हमारे लिए किया है उसे ग्रहण करने का एक ढंग अपने भाइयों और बहनों से प्रेम करना है।

(4) *यीशु ने कहा कि हम संसार से प्रेम न करें* (1 यूहन्ना 2:15-17)। बेशक ''संसार'' जिससे हमें प्रेम नहीं रखना है वह भौतिक संसार नहीं है जिसमें हम रहते हैं। न ही इसमें उन लोगों को शामिल किया गया है, जो इस संसार में रहते हैं बल्कि यह संसार में पाए जाने वाले

पापपूर्ण व्यवहारों तथा कार्यों को जैसे ''शरीर की अभिलाषा,'' ''आंखों की अभिलाषा'' और ''जीवन का अभिमान'' जैसी बातें है। यदि हमारे जीवन अभिलाषा और घमण्ड से भरे हैं तो हम पिता से प्रेम नहीं कर सकते।

इसके अलावा यूहन्ना ने संसार से नहीं बल्कि इसके बजाय परमेश्वर से प्रेम करने का लाभ बताया: ''संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, ...'' (1 यूहन्ना 2:17)। यदि हमारी अभिलाषाएं पूर्णतया पूरी हो सकें, तौ भी यदि हमारे पास संसार की हर चीज़ हो जिसे हम चाहते हैं, तो संसार के बीच जाने पर हमारे पास क्या रह जाएगा? मरने पर और संसार को छोड़कर जाने पर हमारी प्राप्ति क्या रहेगी? परन्तु, ''जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा!'' हमें संसार से नहीं बल्कि परमेश्वर से और उसकी इच्छा पूरी करने से प्रेम करना आवश्यक है। तभी हम सदा के लिए उसके साथ रह सकेंगे।

सारांश

परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र यीशु, शरीर बना। वह वही है जिसे परमेश्वर ने संसार का उद्धारकर्ता होने के लिए भेजा। मसीही बनने पर वह हमें हमारे पापों से बचाता है; मसीही होने के रूप में पाप करने पर वह हमें अपने लहू में शुद्ध करके बचाता रहता है और उसमें ''अनन्त जीवन'' के लिए हमें अनन्तकाल के लिए बचाएगा। वह हम में से उन लोगों में से जिन्हें उसने बचाया है कुछ मांग करता है। (1) हमें उन सच्चाइयों को पकड़े रहना आवश्यक है जिन्हें हमने माना है। (2) हमें उसकी आज्ञाओं को मानना आवश्यक है। (3) हमें एक दूसरे से प्रेम रखना आवश्यक है। (4) हमें संसार से प्रेम करने से इनकार करना आवश्यक है।

शायद आप लेट हो गए और आपकी बस या गाड़ी छूट गई। थोड़ी देर के लिए यह अनुभव एक बर्बादी की तरह लगता है, परन्तु कुछ ही मिनटों में एक और बस या गाड़ी आ जाएगी जो आपको वहां ले जा सकती है, जहां आप जा रहे हैं। परन्तु स्वर्ग में जाने के लिए मसीह की आज्ञा मानने का अवसर खोया नहीं जा सकता। आप यह नहीं कह सकते, ''स्वर्ग में ले जाने के लिए एक ओर मार्ग होगा।'' केवल मसीह ही उद्धारकर्त्ता है (प्रेरितों 4:12)। एक अर्थ में उसने कहा, ''मैं ही [एकमात्र] मार्ग और [एकमात्र] सत्य और [एकमात्र] जीवन हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आता है'' (1 यूहन्ना 14:6)। यदि मसीह आपके हाथ से निकल गया, तो आप स्वर्ग को नहीं पकड़ पाएंगे!

उद्धार पुत्र के द्वारा है! पुत्र के पास आओ और उद्धार पाओ! उसमें विश्वास करो, अपने पापों से मन फिराओ (लूका 13:3)। परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसमें अपने विश्वास का अंगीकार करो (रोमियों 10:9, 10) और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लो। यह करो और पुत्र के द्वारा उद्धार पाओगे (प्रेरितों 2:38)।

टिप्पणियां

[1]टीकाकार आम तौर पर इस वाक्यांश को मसीह के *व्यक्ति* से नहीं मिलाते, बल्कि मसीह के बारे में *संदेश* से मिलाते हैं। [2]प्रायश्चित (*hilasmos*) '''प्रायश्चित करने, अर्थात एक साधन जिससे पाप ढांपा और क्षमा किया जाता है' का संकेत देता है'' (डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट*

एक्पोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स [नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985], 494)। [3]यूहन्ना की पत्री में एक और जगह, यीशु को एक और वाक्यांश ''नाम'' से सम्बोधित किया गया है (3 यूहन्ना 7)। [4]इस तथ्य से कि कुछ झूठे शिक्षक ''हम ही में से गए'' कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि जिन कलीसिया या कलीसियाओं को यूहन्ना ने सम्बोधित किया उनमें मतभेद पाए जाते थे; उनके लिए 1 यूहन्ना 2:19 ''इन पत्रियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए यूहन्ना के पत्रों की सबसे महत्वपूर्ण आयत है।'' (थॉमस एफ़. जॉनसन, *1, 2, और 3 जॉन,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमैंट्री [पीबॉडी, मैसाच्युएट्स: हैड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1993], 56)। कैलविनवादी लोग जो विश्वासत्याग की असम्भावना में विश्वास रखते हैं, इस वचन का इस्तेमाल यह बहस करने के लिए करते हैं कि यदि कोई गिर जाता है, तो वह पहली बात तो यह कि वास्तव में मसीही था ही नहीं, तौभी यह इस बात को वे लोग शामिल थे जो वास्तव में मसीही नहीं थे। विश्वासत्याग की सम्भावना नये नियम की कई आयतों में पाई जाती है। इस वचन पर कैलविनवादी शिक्षा पर गाय एन वुड्स, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट एपिस्टल ऑफ़ पीटर, जॉन एंड ज्यूड* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1983), 244-45. करटिस ए. केट्स, ''देअर हैव एरायइसन मैनी एंटी-क्राइस्ट,'' *डेनटन लैक्चर्स* (1987), 137-38 में किया गया है। [5]धर्मी विरोधी सैरंथुस ने दूसरी शताब्दी में यह यह शिक्षा दी। (जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *दि लैटर्स ऑफ़ जॉन,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री [ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1968], 5, 6, 131.)। [6]यूहन्ना रचित सुसमाचार की मसीह की ईश्वरीयता के गवाहों पर ज़ोर देता है (देखें यूहन्ना 5:33-47)। [7]KJV में 7 और 8 आयतों में वह सामग्री जोड़ी गई है जो बाद के संस्करणों में शामिल नहीं की गई और निश्चित रूप से यूहन्ना द्वारा लिखे गए मूल हस्तलेख में नहीं थी। 1 यूहन्ना का परिचय देखें। [8]हाल ही के टीकाओं में आम तौर पर इस बात पर सहमति है कि ''पानी'' यहां यीशु के बपतिस्मे का संकेत है और ''लहू'' उसकी मृत्यु का संकेत, चाहे और व्यख्याएं भी दी गई हैं। (एडविन ए. ब्लम एंड गलेन डब्ल्यू. बार्कर, ''1, 2 पतरस; 1, 2, 3 पीटर; यहूदा, *दि एक्पोज़िटर'स बाइबल कमैंट्री विद द न्यू इंटरनैशनल वर्ज़न* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1996], 144; रॉबर्ट्स, 130-31.)। यीशु की मृत्यु के हवाले का महत्व यह पुष्टि करने के लिए हो सकता है कि यीशु मसीह, अर्थात परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र, वास्तव में मरा। कुछ धर्मविरोधियों द्वारा इस सच्चाई का इनकार किया जाता था। [9]1 यूहन्ना 4:10 यह भी कहता है कि यीशु को ''हमारे पापों का प्रायश्चित होने के लिए भेजा गया था।'' [10]संयोगवश 1 यूहन्ना 3:16 और यूहन्ना 3:16 जो नये नियम की सबसे पसन्द की जाने वाली आयत है एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। इसके अलावा जैसे 1 यूहन्ना 3:16 पुस्तक के लगभग केन्द्र में है, इस आयत का संदेश भी यूहन्ना की पत्री का मुख्य आकर्षण है।

[11]इस आयत की क्रियाएं वर्तमानकाल में हैं और निरन्तर कार्य को दर्शाती हैं। [12]''सहायक'' *parakletos* का अनुवाद है जो दो यूनानी शब्दों से लिया गया है जो ''किसी के पक्ष में होने के लिए बुलाया गया'' के विचार का सुझाव देता है (वाइन, अंगर एंड व्हाइट, 111)। यूहन्ना रचित सुसमाचार में पवित्र आत्मा को ''सहायता के लिए बुलाया गया'' अर्थात ''तसल्ली देने वाले'' (KJV) या ''सहायक'' (NASB) के रूप में बताया गया है (उदाहरण के लिए देखें यूहन्ना 15:26)। यीशु ने अपने चेलों को बताया कि परमेश्वर ''एक और सहायक [*Parakletos*]'' भेजेगा (यूहन्ना 14:16), जो इस बात का संकेत था कि वह स्वयं मूल तसल्ली देने वाला (*Parakletos*) था। *Paraclete* के कई अर्थ हैं, परन्तु यह ''वकील, या अटॉरनी, या आदालत में जिसकी ओर से काम किया जाता है'' का सुझाव देता है (वुड्स, 222)। [13]एफ. एफ. ब्रूस, *दि एपिस्टल्स ऑफ़ जॉन: इंट्रोडक्शन, एक्सपोज़िशन एंड नोट्स* (पृष्ठ नहीं: पिकरंग एंड इंग्लिस, 1970; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 53-54.